www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

नकल का प्रतिफल

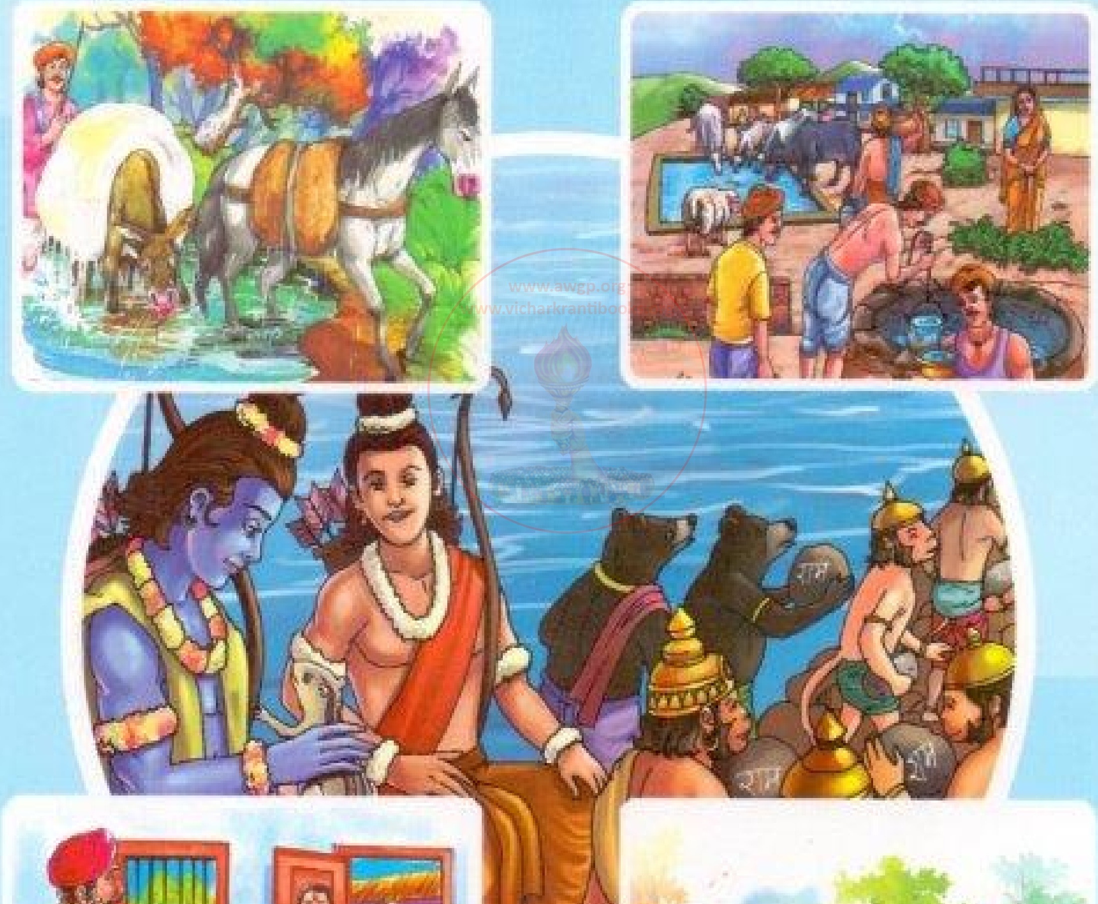

5

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गिलहरी का योगदान

रावण जब सीताजी को लंका में ले गया, तब समुद्र पार करने के लिए रामचंद्र जी और उनके सहयोगी मिलकर समुद्र पर पुल बाँधने का कार्य कर रहे थे। नल और नील की सहायता में सारे बंदर-भालू लग गए। पहाड़ के पहाड़ लाकर बंदरों ने समुद्र पाटना प्रारंभ कर दिया। वहीं पर एक गिलहरी भी थी। वह गिलहरी धूल में जाती और थोड़ी सी धूल शरीर में ले जाकर समुद्र में डाल आती। राम ने पूछा—"गिलहरी तेरे इस काम से समुद्र कैसे पट सकेगा?" गिलहरी बोली—"भगवान! शुभ काम में अपनी जितनी सामर्थ्य है उसी से सहयोग भी काफी होता है।" भगवान बड़े प्रसन्न हुए। स्नेह से उसकी पीठ पर हाथ फेरा। कहते हैं गिलहरी की पीठ पर आज भी भगवान की उँगलियों के निशान बने हैं।

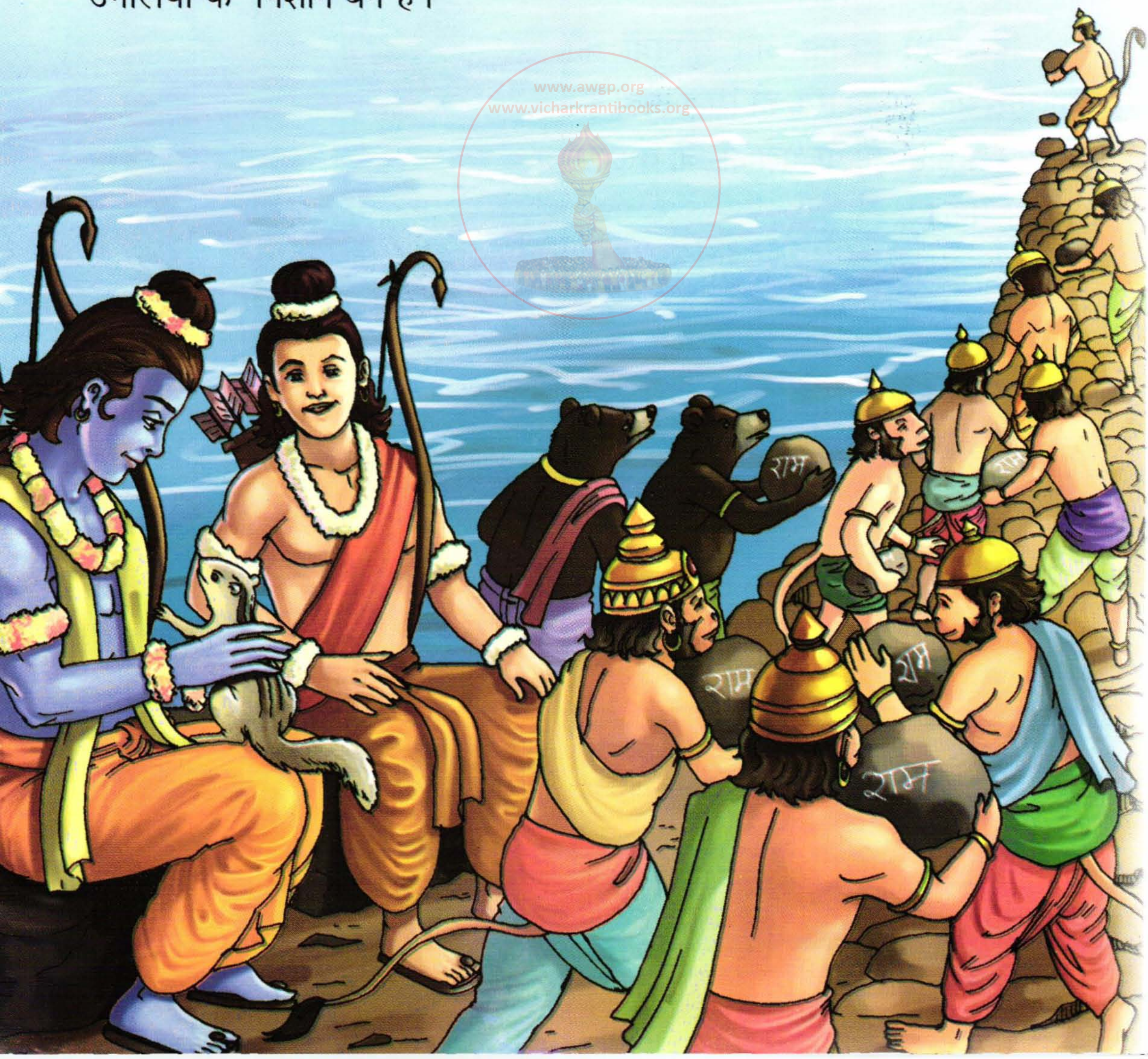

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उथली सहानुभूति

एक जंगल में एक भला खरगोश रहता था। वह सभी पशुओं की सहायता करता और मीठा बोलता था। जंगल के सभी जानवर उसके मित्र हो गए। एक बार खरगोश बीमार पड़ा। उसने बुरे वक्त के लिए कुछ चारा-दाना अपनी झाड़ी में जमा कर रखा था। सहानुभूति दिखाने के लिए जिसने सुना वही दौड़ा आया। वे आते ही इकट्ठे किए हुए चारे-दाने में मुँह मारना शुरू कर देते। एक ही दिन में उस बेचारे बीमार खरगोश का दाना-चारा समाप्त कर दिया। खरगोश अच्छा तो होने लगा, पर कमजोरी में चारा ढूँढ़ने के लिए बाहर न जा सका और भूखों मर गया।

दिखावटी मित्रता और कुपात्रों की सहानुभूति सदा हानिकारक ही सिद्ध होती है। सच्चे मित्र थोड़े ही हों, पर भले हों, जो वक्त पर काम आ सकें।

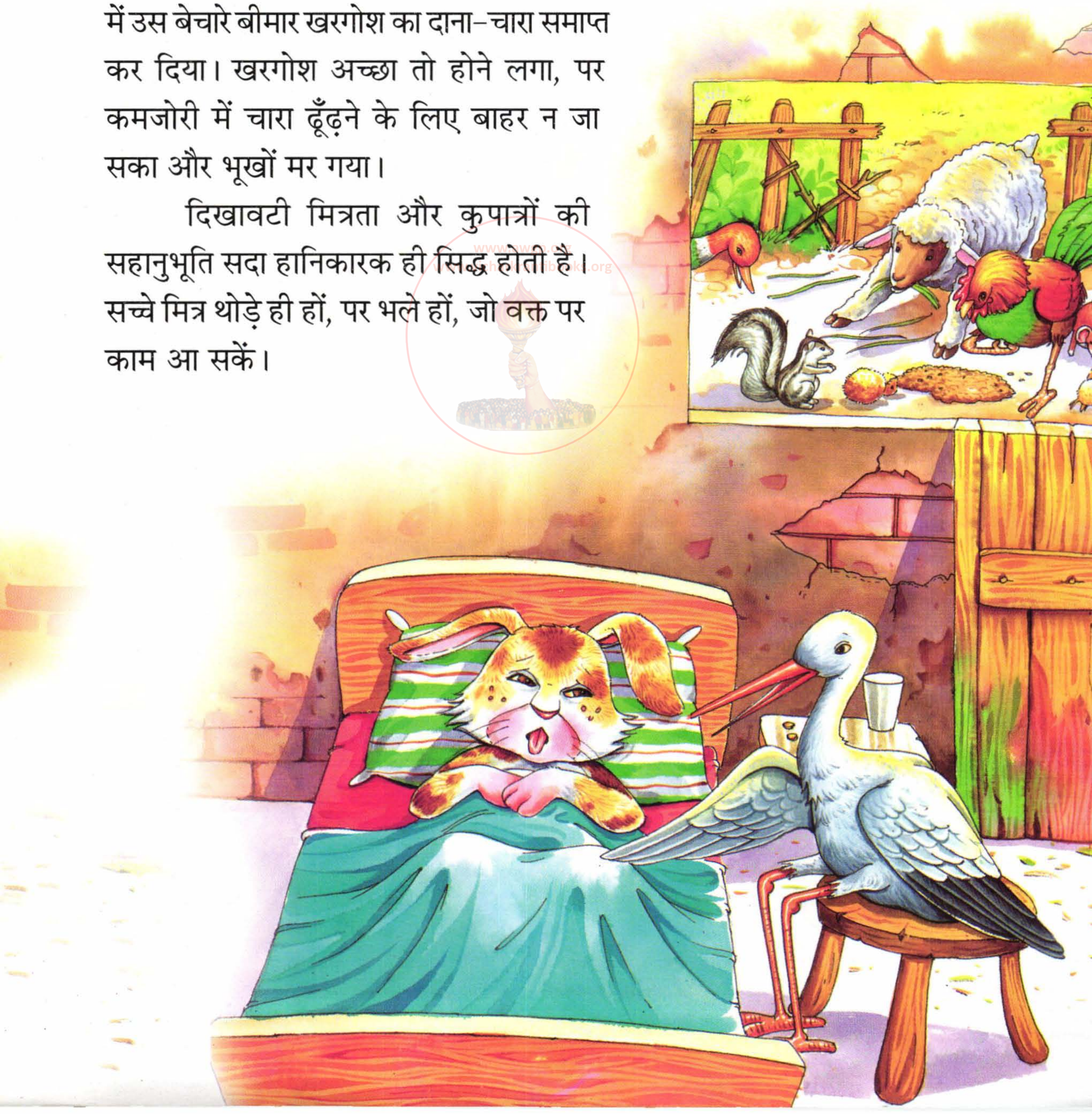

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दयालु हंस और धोखेबाज चूहा

एक हंस उड़ता हुआ अपने निवास स्थान की ओर जा रहा था। साँझ का समय था। उसने देखा एक चूहा ठंढ के मारे ठिठुरता बेहोश सा पड़ा हुआ है। उसे देखकर हंस को दया आ गई। सज्जनों का स्वभाव ही ऐसा होता है। वह नीचे उतरा, अपने पंख फैलाकर चूहे को ढक लिया। इससे सरदी रुक गई और धीरे-धीरे चूहे के बदन में गरमी आई और अपने आप को ठीक महसूस करने लगा। अब क्या था, वह अपने कुतरने के काम में लग गया और हंस के मुलायम-मुलायम परों को काट दिया। सबेरा हुआ, सूर्य की किरणें वसुधा पर फैलने लगीं। हंस ने उड़ने की तैयारी की, किंतु वह उड़ न सका। चूहे के धोखे पर उसे बड़ा दुःख हुआ और जब तक दूसरे पंख न उगे, वहीं घूम-फिरकर अपने दिन काटने पड़े।

सज्जन होना ठीक है, पर धोखेबाजों की पहचान रखना भी उतनी ही बड़ी आवश्यकता है। नहीं तो हानि ही उठानी पड़ती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदेश नहीं सहयोग

अमेरिका में उन दिनों सुरक्षा दुर्ग की एक इमारत बन रही थी। सैनिक उस काम में जुटे थे। एक भारी लट्ठा ऊपर चढ़ाया जाना था। नायक दूर खड़ा-खड़ा 'जोर लगाओ' का आदेश दे रहा था, पर लट्ठा उठ नहीं पा रहा था।

एक घुड़सवार उधर से निकला, देखकर वह रुक गया। जब देखा कि लट्ठा उठाने में सैनिक सफल नहीं हो पा रहे हैं तो उसने पेड़ से घोड़ा बाँधा, कोट उतारा और जोर लगाने वाले सैनिकों के साथ जुट कर लट्ठा उठवाने लगा। अबकी बार लट्ठा उठ गया। घुड़सवार चलने लगा, तो उस सहायता के लिए नायक ने उसे धन्यवाद दिया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सवार ने कहा—"महोदय, ऐसी ही कोई कठिनाई फिर सामने हो, तो मुझे याद करना। स्वयं जुटकर आपका काम आसान करा दिया करूँगा।"

नायक ने नाम पूछा, तो सवार ने जवाब दिया—"जॉर्ज वाशिंगटन, प्रधान सेनापति और अमेरिका का राष्ट्रपति।" यह सुनकर नायक अचंभित रह गया। उसे विश्वास ही न हो रहा था कि स्वयं अमेरिका के राष्ट्रपति उसके सामने खड़े हैं। उसका सिर श्रद्धा से झुक गया। नायक को अपने ऊपर लज्जा आई। उसने सदा के लिए यह बात याद रखी कि स्वयं आगे बढ़कर काम में जुट जाने से, अपने साथियों की शक्ति बढ़ जाती है। तब कठिन लगने वाला काम भी सहज बन जाता है। दूसरों को उपदेश देने मात्र से कोई काम नहीं बनता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुलाब और मधुमक्खी

एक गुलाब का पौधा था उस पर सुंदर गुलाब का फूल लगा था। एक दिन गुलाब से मधुमक्खी बोली—"तुम जानते हो कि एक-एक करके तुम्हारे सब पुष्प तोड़ लिए जाते हैं, फिर भी तुम पुष्प उत्पन्न करना बंद क्यों नहीं करते ?" गुलाब ने हँसकर कहा—"देवि ! मनुष्य क्या करता है, यह देखकर संसार को सुंदर बनाने के कर्त्तव्य से मैं क्यों गिरूँ ? फिर तुम जैसी मधु संचय करने वालों की मदद भी तो करनी है। बहन, फूल टूटने का दु:ख कम है, दूसरों को प्रसन्नता बाँटने का संतोष अधिक महत्त्व का है। दूसरों का उपकार हो जाए इससे सुंदर और कोई बात नहीं।"

ऐसे सुंदर भाव रखने के कारण गुलाब का सौंदर्य और अधिक बढ़ गया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नकल का प्रतिफल

एक व्यापारी एक घोड़े पर नमक और एक गधे पर रूई की गाँठ लादे जा रहा था। रास्ते में एक नदी पड़ी। पानी में धँसते ही घोड़े ने पानी में डुबकी लगाई तो काफी नमक पानी में घुल गया। गधे ने घोड़े से पूछा—"यह क्या कर रहे हो?" घोड़े ने कहा—"वजन हलका कर रहा हूँ।" यह सुनकर गधे ने भी दो डुबकी लगाईं पर उससे रूई की गाँठ भीगकर इतनी भारी हो गई कि उसे ढोने में गधे की जान आफत में पड़ गई। बिना समझे-बूझे की गई नकल कठिनाइयाँ बढ़ाती हैं, सुविधा नहीं।

इस प्रकार परदा प्रथा, विवाह में अपव्यय, लेन-देन, मृत्युभोज जैसे प्रचलन समय के अनुसार समाप्त हो जाना चाहिए थे, पर समाज में दूसरे लोग कर रहे हैं इसलिए हमें भी करना चाहिए—ऐसा सोचकर ये परंपराएँ समाप्त नहीं हो पा रही हैं।

जो उपयोगी परंपराएँ नहीं उन्हें छोड़ देना चाहिए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मन में जगह होनी चाहिए

एक संत के पास केवल एक छोटी सी झोंपड़ी थी, जिसमें वे ही लेट सकते थे। एक दिन जोरों की वर्षा हुई। किसी ने दरवाजा खटखटाते हुए आवाज दी—"क्या अंदर जगह है ?" संत ने कहा—"इसमें एक व्यक्ति सो सकता है लेकिन दो बैठे रह सकते हैं, आप अंदर आ जाइए।" उसे अंदर ले लिया गया और वे दोनों बैठ गए। थोड़ी देर बाद फिर किसी ने कुंडी खटखटाई—"मेरे लिए अंदर जगह है क्या ?" संत ने जवाब दिया—"यहाँ दो आदमी बैठ सकते हैं किंतु तीन खड़े रह सकते हैं आ जाओ भाई" और दरवाजा खोल दिया गया। तीनों ने वह बरसात की रात खड़े होकर काटी। यदि ऐसे एकदूसरे की सहायता के लिए सब व्यक्ति सोचने लगें तो संसार में से कष्ट मिटाए जा सकते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुत्र को सत्परामर्श

अमेरिका के राष्ट्रपति एण्ड्रयू जैक्सन की माता को एक जहाज पर नर्स के रूप में विदेश जाना पड़ा। तब जैक्सन चौदह वर्ष के थे। माता ने अपने पुत्र को एक बहुमूल्य संदेश भेजा जिसमें लिखा था—"एण्ड्रयू, यदि मैं जीवित वापस न लौटूँ तो जिंदगी भर मेरी एक बात याद रखना—इस संसार में हर मनुष्य को अपना रास्ता आप बनाना पड़ता है। आगे बढ़ने के लिए सच्चे दोस्तों की जरूरत पड़ती है और वे उन्हें ही मिल सकते हैं जो स्वयं ईमानदार हैं।"

जैक्सन ने जीवन भर अपनी माता के इस अंतिम उपदेश को याद रखा। यही उनकी सफलता का मूल मंत्र बन गया। ईमानदार होने के कारण वे स्वयं भी सफल और लोकप्रिय बने। साथ ही वैसे ही मित्रों को पाकर उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक बीज फला, दूसरा सड़ा

दो अनाज के बीज थे, वे किसी प्रकार जमीन पर गिर पड़े। मिट्टी ने उन्हें ढक दिया। दोनों रात में सुख की नींद सोए। प्रातः काल दोनों जगे तो एक के अंकुर फूट गए और वह ऊपर उठने लगा। यह देख छोटा बीज बोला—"भैया ऊपर मत जाना। वहाँ बहुत भय है। लोग तुझे रौंद डालेंगे, मार डालेंगे।" बीज सब सुनता रहा और चुपचाप ऊपर उठता रहा। धीरे-धीरे धरती की परत पार कर ऊपर निकल आया और बाहर का सौंदर्य देखकर मुस्कराने लगा। सूर्य देवता ने धूप स्नान कराया और पवन देव ने पंखा डुलाया, वर्षा आई और शीतल जल पिला गई, किसान आया और चक्कर लगाकर चला गया। बीज बढ़ता ही गया। झूमता, लहलहाता, फूलता और फलता हुआ बीज एक दिन पूरा पौधा बन गया जिसमें असंख्य बीज थे। जब वह इस संसार से विदा हुआ तो अपने जैसे असंख्य बीज छोड़कर हँसता और आत्मसंतोष अनुभव करता विदा हो गया।

मिट्टी के अंदर दबा बीज यह देखकर पछता रहा था कि मैंने भय और अपने बारे में ही सोचते-सोचते अपनी यह दशा बना ली। मैं जहाँ था वहीं पड़ा रहा और मेरा भाई असंख्य गुना समृद्धि पा गया। प्रत्येक व्यक्ति को आगे बढ़ चलने की लालसा होनी चाहिए। उत्साह रखकर दिन-प्रतिदिन विकास करने से ही व्यक्ति बड़ा बनता है, महान बनता है।

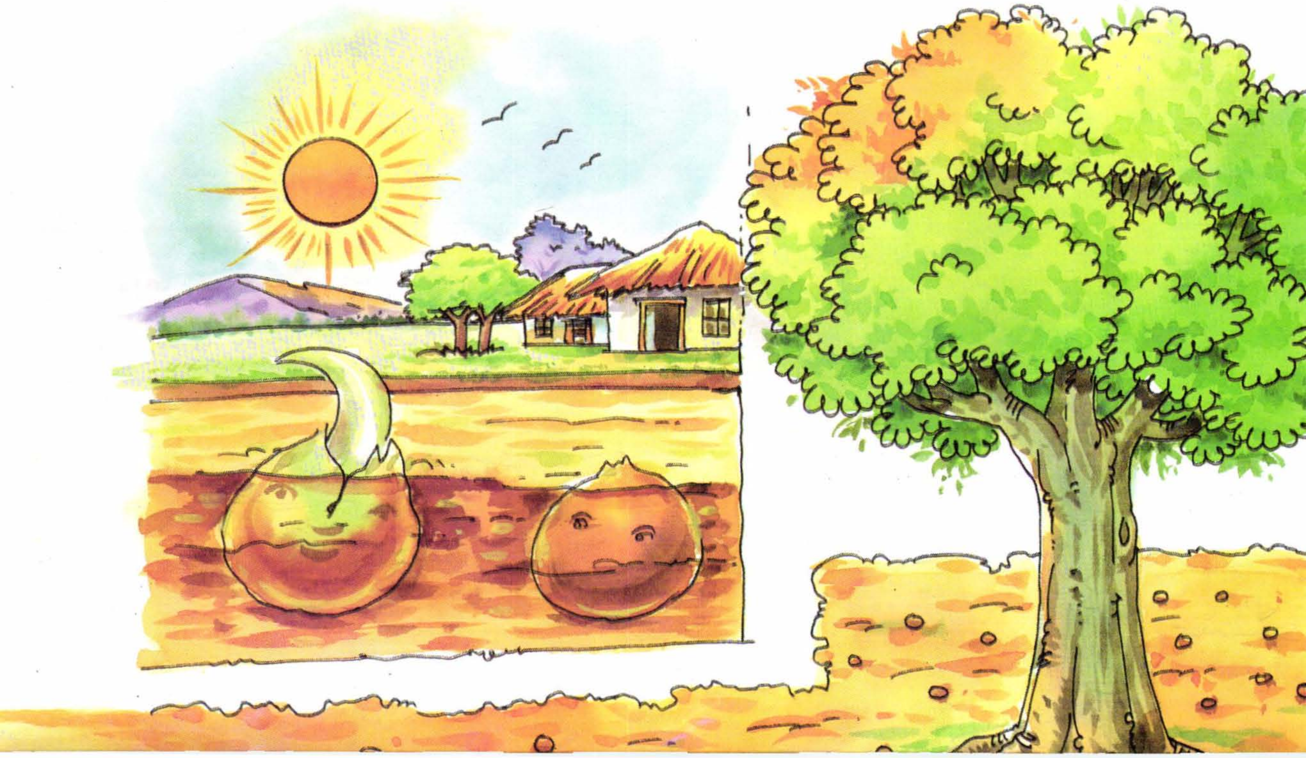

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पत्नी की सूझ-बूझ

गुजरात के एक गाँव की यह एक सत्य घटना है। एक स्त्री की तीस वर्ष की आयु में ही उसके पति की मृत्यु हो गई। उसके पति घर में अपने पीछे छोड़ गए तीस बीघा जमीन और हल-बैल। पत्नी ने सोचा यह पति की संपदा है। इस पर मेरा क्या अधिकार। मुझे भगवान ने दो हाथ इसीलिए दिए हैं, उन्हीं की कमाई खाऊँ। फिर सोचा कि पति की संपत्ति का क्या उपयोग हो?

उसने देखा गाँव में पानी की बड़ी कमी है। स्त्रियों को एक मील दूर कुएँ से पानी लाना पड़ता है। पशुओं को पानी पिलाने की बड़ी दिक्कत पड़ती है। सो उसने पति की जमीन, हल, बैल सब बेचकर गाँव के एक समझदार सज्जन की देख-रेख में एक कुआँ खुदवा दिया। पशुओं के पानी पीने के लिए एक पक्की हौदी भी बनवा दी। उसके इस त्याग और सेवाभावना के कारण आज तक वहाँ प्रत्येक व्यक्ति को पानी मिलता रहता है। ऐसे महान कार्य करने वालों का नाम इतिहास में अमर हो जाता है।

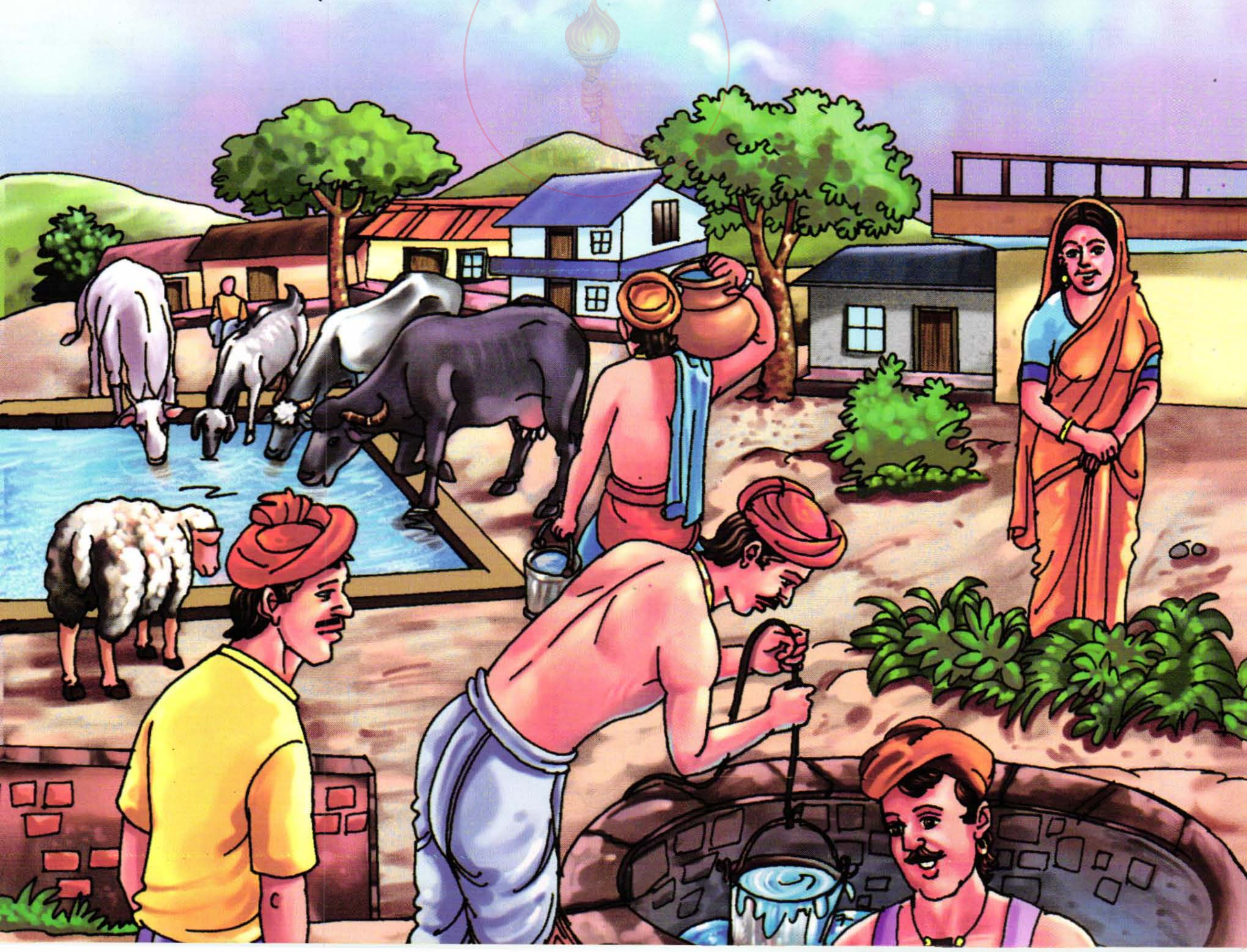

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राणियों की सेवा ही सच्ची पूजा

एक गुरु के दो शिष्य थे। दोनों ही अपने को बहुत बड़ा ईश्वर भक्त मानते थे। ईश्वर उपासना के बाद वे आश्रम में आते और रोगियों की चिकित्सा में गुरु की सहायता किया करते थे। एक दिन उपासना के समय ही कोई कष्ट-पीड़ित रोगी आ पहुँचा। गुरु ने पूजा कर रहे शिष्यों को बुलवाया। उत्तर मिला—"अभी थोड़ी पूजा बाकी है, पूजा समाप्त होते ही आ जाएँगे।" गुरुजी ने दोबारा फिर आदमी भेजा। इस बार शिष्य आ गए। पर उन्होंने अकस्मात बुलाए जाने पर कुछ क्रोध सा प्रकट किया। गुरु ने कहा—"मैंने तुम्हें इस व्यक्ति की सेवा के लिए बुलाया था, प्रार्थनाएँ तो देवता भी कर सकते हैं, किंतु इस प्रकार आए लोगों की सहायता तो मनुष्य ही कर सकते हैं। तुम्हें समझ लेना चाहिए कि सेवा प्रार्थना से अधिक ऊँची है, क्योंकि देवता सेवा नहीं कर सकते मनुष्य ही प्राणियों की सेवा कर सकता है।"

शिष्य अपने कृत्य पर बड़े लज्जित हुए और उस दिन से प्रार्थना की अपेक्षा सेवा को अधिक महत्त्व देने लगे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अटूट निष्ठा

राजा हिमांचल की एक कन्या थी। उसका नाम पार्वती था। वह कन्या शिवजी की बहुत भक्त थी। हिमांचल कन्या पार्वती ने शंकर भगवान को अपना पति चुनने का निश्चय कर लिया। इसके लिए पार्वती एकांत में जाकर कठोर तप में लीन हो गईं। शंकरजी लंबी समाधि में लीन थे, फिर भी पार्वती ने अपने दृढ़ निश्चय को नहीं छोड़ा और शंकरजी को अपना पति बनाने की लगन में तप करती रहीं। एक बार सप्तर्षियों को पता चला तो वे पार्वती की परीक्षा लेने पहुँच गए। सप्तर्षियों ने पार्वती की परीक्षा ली। इस पर पार्वती ने कहा—"मैं शिवजी को ही अपना पति बनाऊँगी। इसके कारण चाहे मुझे आजीवन कुमारी ही क्यों न रहना पड़े।" अंत में अपनी कठोर तपस्या से पार्वती ने शंकरजी को प्रभावित कर लिया और उनको पति रूप में शंकर भगवान मिल गए।

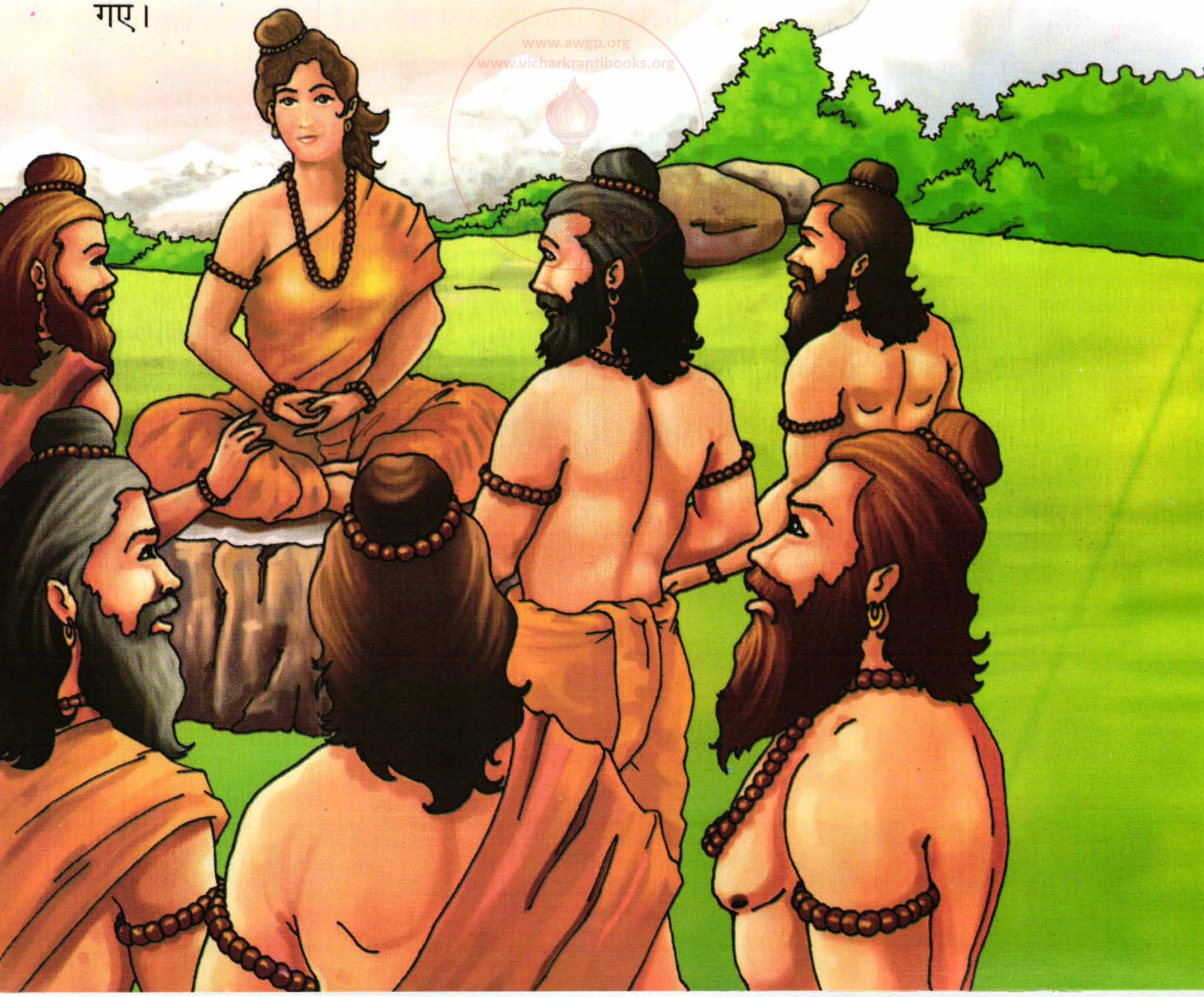

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिंहशावक गीदड़ों के बीच

एक गीदड़ ने सिंह के बच्चे को नवजात अवस्था में कहीं पड़ा देखा, उठाया और उसे अपने बच्चों के साथ पालने लगा। सिंहशावक गीदड़ों के बच्चों के साथ पलते-पलते उस गीदड़ों के परिवार के साथ रहकर विकसित होते कभी स्वयं को नहीं पहचान पाया। एक बार गीदड़ों का परिवार शिकार को गया। मरे हाथी पर जैसे ही खाने के लिए टूटे, वैसे ही स्वयं वनराज सिंह वहाँ पधार गए। उन्हें देखते ही गीदड़ परिवार भाग खड़ा हुआ, पर सिंह की पकड़ में सिंहशावक आ गया। सिंह ने उससे पूछा—"वह कैसे उनके साथ था और भयभीत क्यों होता है ?" शावक समझ ही नहीं पा रहा था कि यह सब क्या है ? उसे भय से काँपते देख वनराज सब समझ गए। उन्होंने उसे पानी में अपनी परछांई दिखाई व फिर स्वयं अपना चेहरा दिखाया। स्वयं दहाड़े और उसे भी स्वयं दहाड़ने को कहा। तब उसे अपने विस्मृत आत्मस्वरूप का भान हुआ और वह सिंह बिरादरी में शामिल हो उन्मुक्त, भयमुक्त विचरण करने लगा।

ऐसे लोगों की संख्या अधिक होती है जो अपना स्वरूप भूलकर अपनी उन्नति नहीं कर पाते। हम जैसे हैं वैसे ही रहें तभी आनंद मिलता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उदारता की प्रतिमूर्ति

ईश्वरचंद्र विद्यासागर प्रतिभा के ही नहीं करुणा के भी धनी थे। उनके जीवन का कोई दिन ऐसा नहीं बीता, जिससे मानवी गरिमा के उपयुक्त संस्मरण जुड़े हुए न हों। एक दिन उनने सड़क पर पड़ी एक बुढ़िया को देखा, जो मल-मूत्र से सनी हुई थी। बीमारी से कराह रही थी। विद्यासागर उसे कंधे पर रखकर घर ले आए। इलाज किया। अच्छी हो गई, तो उस अनाथ का भरण-पोषण भी जीवन भर स्वयं ही करते रहे। विद्यासागर ने कोई तीर्थयात्रा न की, पर उससे भी हजारों गुना पुण्यफल प्राप्त किया। वे उदारता की प्रतिमूर्ति थे। उनने सेवा-सहानुभूति को एक क्षण के लिए भी अपने से पृथक न होने दिया। इन्हीं उदात्त भावनाओं से प्रेरित होकर उनने राजा राममोहन राय का बताया मार्ग अपनाया और सती प्रथा बंद कराने में, विधवा विवाह प्रचलित कराने में प्राणपण से संघर्ष किया। उस क्षेत्र के ब्राह्मणों नें उन्हें जाति बहिष्कृत कर दिया था, तो भी वे अकेले सत्य के समर्थक होने के नाते अपने में हजार हाथियों का बल अनुभव करते रहे और पुरानी परंपराओं तथा प्रथाओं को समाप्त करने के लिए जीवनभर प्रयत्न करते रहे।

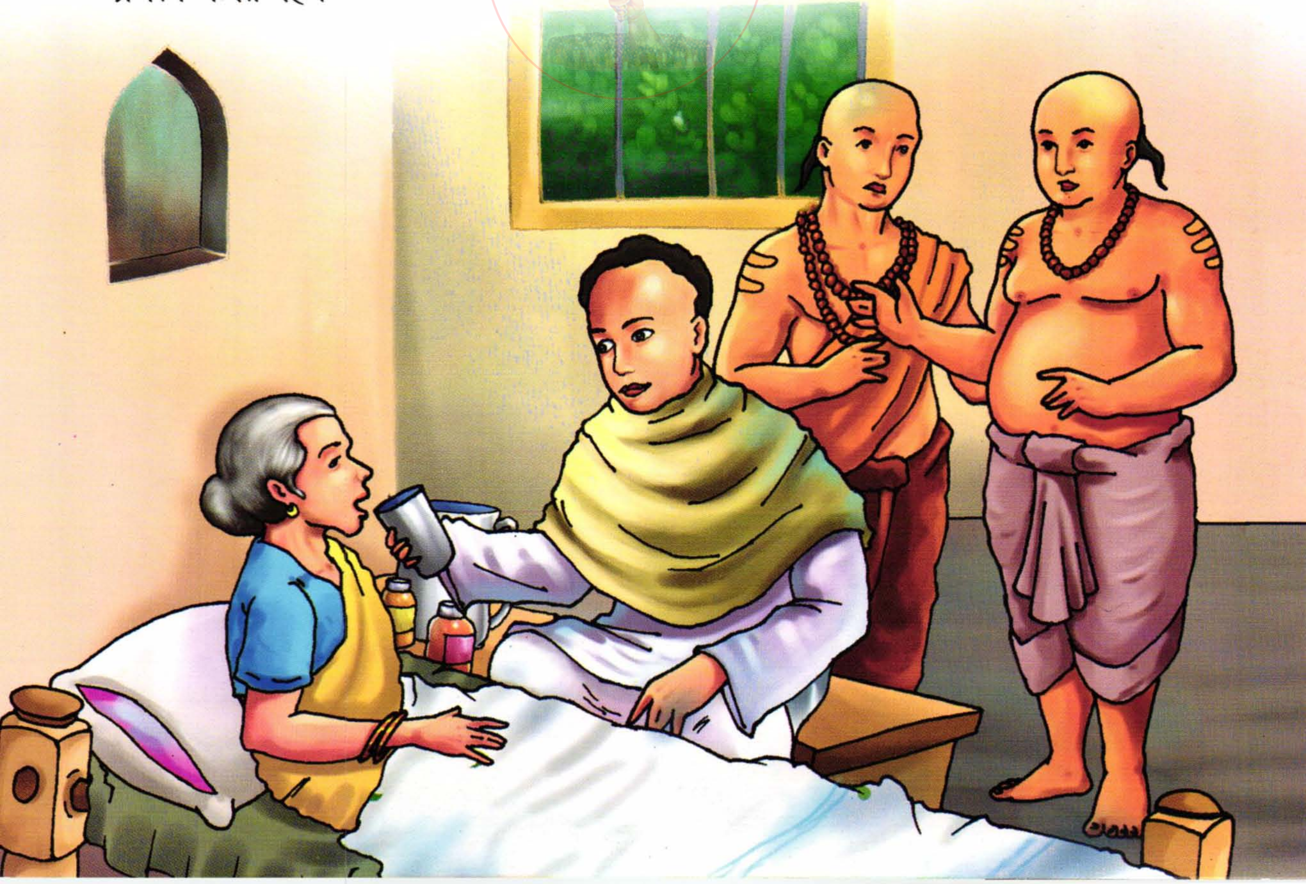

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु-शिष्य स्वर्ग में

एक गुरु के दो शिष्य थे। दोनों किसान थे। भगवान का भजन-पूजन भी दोनों करते थे। स्वच्छता और सफाई पर भी दोनों की आस्था थी, किंतु एक बड़ा सुखी था, दूसरा बड़ा दुखी। गुरु की मृत्यु पहले हुई पीछे दोनों शिष्यों की मृत्यु भी हो गई। दैवयोग से स्वर्गलोक में तीनों एक ही स्थान पर आ मिले,पर स्थिति यहाँ भी पहले जैसी ही थी। जो पृथ्वी पर सुखी था, यहाँ भी प्रसन्नता अनुभव कर रहा था और जो आएदिन क्लेश-कलह आदि के कारण पृथ्वी में अशांत रहता, स्वर्गलोक में भी अशांत दिखाई दिया। दुखी शिष्य ने गुरुदेव के समीप जाकर कहा—"भगवन्! लोग कहते हैं, ईश्वर भक्ति से स्वर्ग में सुख मिलता है पर हम तो यहाँ भी दुखी के दुखी रहे।" गुरु ने गंभीर होकर उत्तर दिया—"वत्स! भक्ति से स्वर्ग तो मिलता है पर सुख और दुःख मन की देन है। मन शुद्ध हो तो नरक में भी सुख ही है और मन शुद्ध नहीं तो स्वर्ग में भी कोई सुख नहीं है।"

व्यक्ति यदि अपनी मनःस्थिति नहीं बदलता तो जो दुखी है, वह दुखी रहेगा और जो सुखी है, वह सुखी रहेगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शिवाजी का स्त्री सम्मान

शिवाजी के सैनिक लड़ाई समाप्त होने पर शत्रु पक्ष की एक युवा विवाहिता को पकड़कर लाए और उसे शिवाजी के सामने प्रस्तुत किया।

बदला चुकाने के लिए सैनिकों को वही तरीका अपनाना चाहिए जो शत्रु अपनाता रहा है, यह सोचकर वे उसे शिवाजी के पास लाए थे।

शिवाजी ने ध्यानपूर्वक युवती को देखा, मुस्कराए और सम्मान सहित उसके घर तक पहुँचा आने की सैनिकों को आज्ञा दी। विदा करते हुए शिवाजी ने अपने दरबारियों से कहा—"काश, मेरी माता जीजाबाई इतनी ही सुंदर होतीं तो आज मैं भी ऐसा ही सुंदर होता।"

हमारी संस्कृति में प्रत्येक स्त्री को माता और बहन की दृष्टि से देखा जाता है। इसीलिए भारतीय संस्कृति महान है।

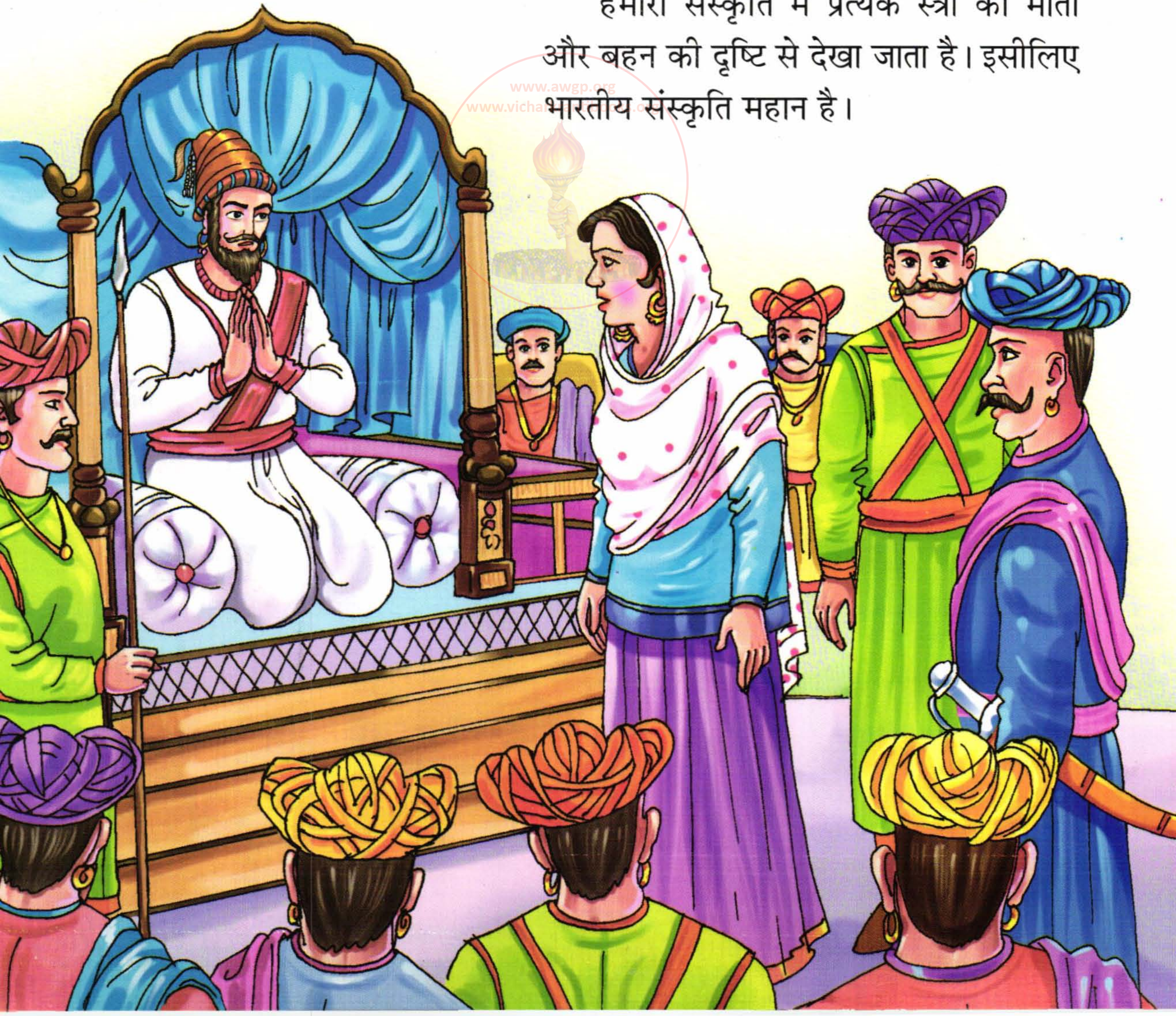

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बढ़ई के बसूले

एक बढ़ई का लोहे का बसूला नदी में गिर गया। बढ़ई ने निश्छल हृदय से भगवान को पुकारा। पहले नदी से सोने का बसूला निकला। उसने भगवान से कहा—''यह मेरा नहीं है भगवन्!'' वह नदी में अंदर चला गया। फिर चाँदी का निकला। उसने कहा—''प्रभु! यह भी मेरा नहीं है।'' तभी नदी से आवाज आई—''वत्स! तेरी ईमानदारी व पवित्रता के इनाम में यह दोनों चाँदी और सोने के बसूले भी तुझे देता हूँ।'' तीनों लेकर वह चला। रास्ते में उसके एक मित्र बढ़ई ने सोने-चाँदी के बसूले देखे और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके मिलने की कथा सुनी तो वह भी उसी जगह आकर अपना लोहे का बसूला नदी में डाल ईश्वर को पुकारने लगा। तभी सोने का बसूला निकला। उसने खुशी से कहा— ''यही मेरा है।'' नदी से आवाज आई—''तू बेईमान है, यह बसूला तेरा नहीं है। नदी में घुसकर अपना बसूला ले ले।'' और इसके साथ ही सोने का बसूला नदी में समा गया।

भगवान इसी प्रकार व्यक्ति के अंतरंग की परीक्षा लेता है। जो पात्र होता है, उसे देता है और जो उससे छल करने लगता है, उससे दिए हुए अधिकार भी छीन लेता है। पात्रता देखकर ही भगवान व्यक्ति को कुछ देता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बिल्ली ने सपना देखा

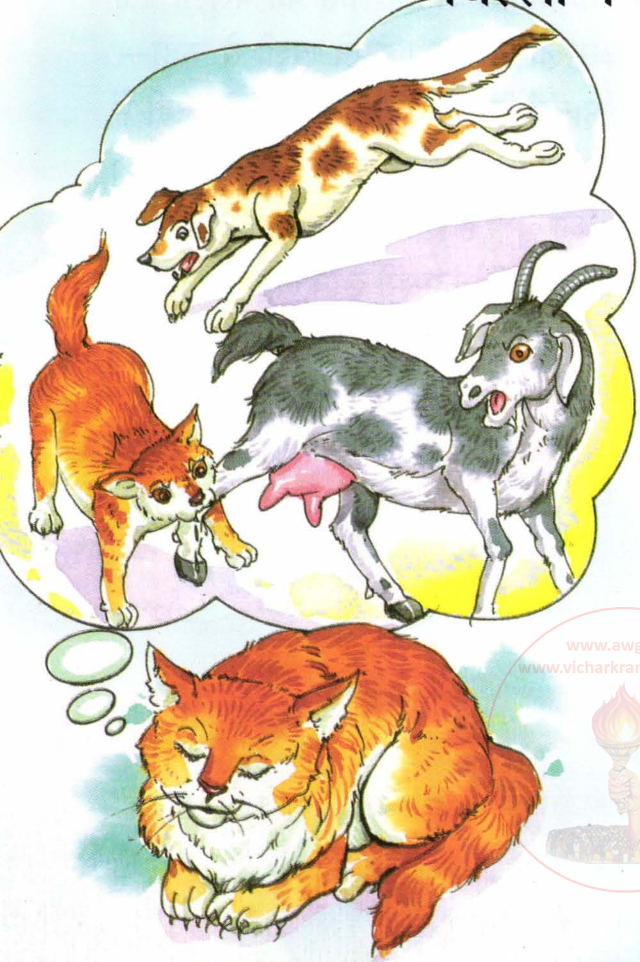

बिल्ली ने सपना देखा कि वह शेर बन गई है और एक मोटी सी बकरी का शिकार कर रही है। शिकार का स्वाद लेने भी न पाई कि उसने देखा कि पड़ोसी का मोटा कुत्ता भौंकता हुआ उसके ऊपर चढ़ दौड़ा। बिल्ली ने बकरी छोड़ दी और वह भागकर मालकिन की कोठरी में आ छिपी। दूसरा सपना बिल्ली ने फिर देखा कि वह कुत्ता बन गई है और मालकिन के चौके में घुसकर स्वादिष्ट व्यंजनों पर हाथ साफ करने की तैयारी कर रही है, इतने में मालकिन आ पहुँची और उन्होंने मोटे बेलन से मार-मारकर उसे बेदम कर दिया और वह बुरी तरह कराहने लगी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उनींदी बिल्ली को कराहते-कलपते देख मालकिन ने उसे जगाया। बिल्ली ने आँखें खोलीं तो कहीं कुछ न था। उसने मालकिन से कहा—"अब मैं वही बनी रहूँगी, जो हूँ। रूप बदलने में तो खतरा ही खतरा रहता है।"

अपने स्वरूप को हम अच्छी तरह समझे रहें, कभी भूलें नहीं। जैसे हैं, वैसे ही रहें, तभी भलाई है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लालच से बचो

एक घर में एक साथ दो बिल्लियाँ घुस गईं। मौका देखकर वे एक रोटी चुराकर ले आईं। घर के पिछवाड़े बैठकर वे बँटवारा करने लगीं। रोटी के दो टुकड़े हुए—एक थोड़ा कम था। इसी को लेकर वे झगड़ने लगीं। दोनों ही बड़ा टुकड़ा लेना चाहती थीं।

पेड़ पर बैठा एक बंदर उनका झगड़ा देख रहा था। वह झट से नीचे कूदकर आया और बोला—"मैं तुम्हारी रोटी तौलकर बाँट दूँगा।" बंदर ने तराजू उठाया और उसके दोनों पल्लों में एक-एक टुकड़ा रखा। जो टुकड़ा भारी था, उसे तोड़कर मुँह में रखा। फिर दूसरा भारी हो गया, उसमें से रोटी का टुकड़ा तोड़कर मुँह में रख लिया। इसी प्रकार थोड़ी-थोड़ी करके वह सारी रोटी खा गया।

तराजू में थोड़ा सा रोटी का चूरा बचा था, उसे बंदर ने यह कहते हुए खा लिया—"यह मेरी बँटवारे की फीस है।" भूखी दोनों बिल्लियाँ अपना सा मुँह लेकर रह गईं। सच ही है—लालच और लड़ाई-झगड़े से बचना चाहिए। झगड़ा होने पर आपस में ही समझौता कर लें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चंदन का कोयला बनाया

एक राजा वनभ्रमण को गया। रास्ता भूल जाने पर भूख-प्यास से पीड़ित वह एक वनवासी की झोंपड़ी पर पहुँचा। समय पर मिले रूखे-सूखे भोजन ने उसे तृप्त कर दिया। चलते समय उसने उस वनवासी से कहा—"हम इस राज्य के शासक हैं। तुम्हारी सज्जनता से प्रभावित होकर चंदन का एक बाग तुम्हें देते हैं। तुम्हारा शेष जीवन आनंद से बीतेगा।"

चंदन का वन तो उसे मिल गया पर चंदन का क्या महत्त्व है और उससे किस प्रकार लाभ उठाया जा सकता है, इसकी जानकारी न होने से वनवासी चंदन के वृक्ष काटकर उनका कोयला बनाकर नगर में बेचने लगा। इस प्रकार किसी तरह उसके गुजारे की व्यवस्था बन गई।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धीरे-धीरे सभी वृक्ष समाप्त हो गए। एक अंतिम पेड़ बचा। वर्षा होने के कारण कोयला न बन सका तो उसने लकड़ी बेचने का निश्चय किया। लकड़ी का गट्ठा लेकर जब बाजार में पहुँचा तो चंदन की सुगंध से प्रभावित लोगों ने उसको अधिक मूल्य देकर खरीदा। आश्चर्यचकित वनवासी ने इसका कारण पूछा तो लोगों ने कहा—"यह चंदन की लकड़ी है, बहुत मूल्यवान है। यदि तुम्हारे पास ऐसी ही और लकड़ी हो तो उसका प्रचुर मूल्य प्राप्त कर सकते हो।"

वनवासी अपनी नासमझी पर पश्चात्ताप करने लगा कि उसने इतना बड़ा बहुमूल्य चंदनवन कोयला बनाकर कौड़ी मोल बेच दिया। पछताते हुए, नासमझ को सांत्वना देते हुए एक विचारशील व्यक्ति ने कहा—"मित्र! पछताओ मत, यह सारी दुनिया तुम्हारी ही तरह नासमझ है। तुम्हारे पास जो एक वृक्ष बचा है, उसी का सदुपयोग कर लो तो कम नहीं।" बहुत गँवाकर भी अंत में यदि कोई मनुष्य सँभल जाता है तो वह भी बुद्धिमान ही माना जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शांति की संपदा

बैकुंठ में बड़ी भीड़ थी। महाविष्णु आसन पर विराजमान सभी प्राणियों को त्रैलोक्य की संपदा वितरित कर रहे थे। उन्होंने संकल्प किया था कि आज किसी को खाली हाथ नहीं जाने देंगे। धन-रत्न, पुत्र-पौत्र, स्वास्थ्य-सुख, वैभव-विलास मांगने वालों का तांता नहीं टूट रहा था। महाविष्णु उदारतापूर्वक सबकी इच्छा पूरी कर रहे थे। बैकुंठ का कोश रिक्त होते देख महालक्ष्मी दौड़कर आईं और पति का हाथ पकड़कर बोलीं—"यदि इसी प्रकार आप मुक्त भाव से संपदा लुटाते रहे तो बैकुंठ में कुछ भी शेष न रहेगा। तब हम क्या करेंगे?" महाविष्णु मंद-मंद हँसे, बोले—"देवि! मैंने सारी संपदा तो अभी नहीं दे दी। एक संपदा ऐसी है जिसे नर, किन्नर, गंधर्व, विद्याधर एवं असुर में से किसी ने भी नहीं माँगा है।"

"कौन सी संपदा?" महालक्ष्मी पूछ बैठीं।

"वह संपदा है शांति—उसे कोई नहीं माँगता। ये प्राणी भूल गए हैं कि शांति के बिना कोई भी संपदा पास नहीं रह सकेगी। उन्होंने जो माँगा वह मैंने उन्हें दे दिया। अपने लिए मैंने मात्र शांति की निधि सुरक्षित रख ली है। जो भगवान पर विश्वास नहीं करते ऐसे व्यक्ति न शांति माँगते हैं, और न उन्हें दी जा सकती है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कमंडल कड़वा

महाभारत समाप्त होने के उपरांत धर्मराज युधिष्ठिर ने तीर्थयात्रा करने का निश्चय किया, साथ में चारों भाई—अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव और द्रोपदी भी थीं। प्रस्थान करने से पूर्व वह भगवान कृष्ण के पास भी गए और उनसे साथ चलने को कहा। कृष्ण को उस समय कुछ आवश्यक कार्य थे। अतः तीर्थयात्रा में साथ न जा सके, पर सुखद यात्रा की कामना करते हुए उन्होंने अपना कमंडल अवश्य दे दिया और यह कहा—"जहाँ-जहाँ तीर्थ स्थानों, नदियों और सरोवरों में स्नान करने का आपको अवसर मिले वहाँ-वहाँ इस कमंडल को भी उनमें डुबा लेना।" युधिष्ठिर कमंडल लेकर सपरिवार तीर्थयात्रा को चल पड़े। काफी दिनों के बाद वापस लौटे और कृष्ण को उनका कमंडल देते हुए कहा—"आपकी आज्ञानुसार जहाँ मैंने स्नान किया, वहाँ इसे भी पानी में डुबोया है।"

"यही तो मैं चाहता था।" इतना कहकर कृष्ण ने उस कमंडल को जमीन में पटककर टुकड़े-टुकड़े कर दिए और प्रसाद रूप में एक-एक टुकड़ा वहाँ उपस्थित सभी लोगों को वितरित कर दिया। जिसने भी प्रसाद चखा उसका मुँह खराब हो गया। लोगों को थूकते हुए तथा मुँह बनाते हुए देखकर कृष्ण ने धर्मराज से पूछा—"यह इतने तीर्थों में घूमकर आ रहा है और अनेक स्थानों पर स्नान भी किया है फिर भी इसका कड़वापन दूर क्यों नहीं हुआ?"

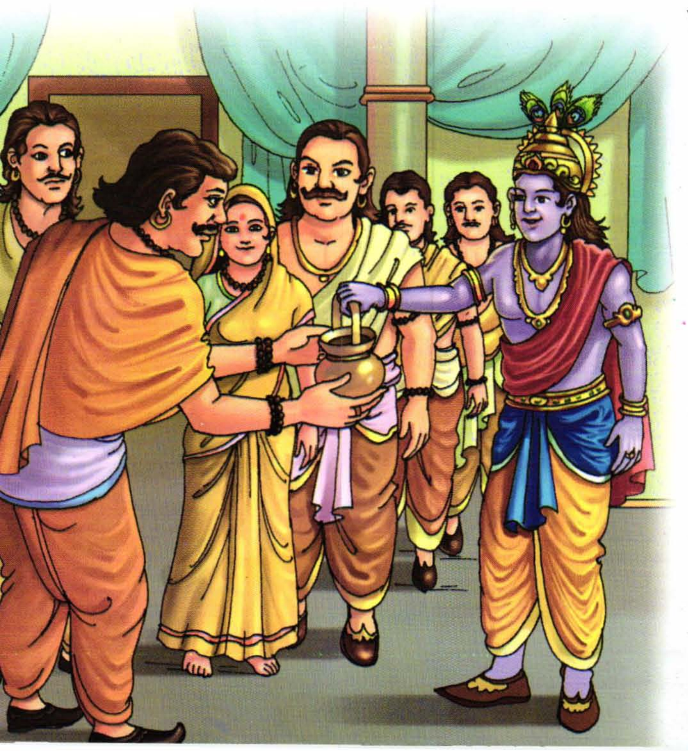

"आप भी कैसी अजीब बात करते हैं कृष्ण, कहीं धोने मात्र से कमंडल का कड़वापन निकल सकता है?" धर्मराज ने उत्तर दिया। भगवान कृष्ण ने समाधान करते हुए कहा—"केवल तीर्थस्नान करने से ही कुछ नहीं होता; हृदय को, मन को शुद्ध करना आवश्यक होता है।" धर्मराज ने अपनी गलती सुधारी और आत्मशोधन की विद्या को समझा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भेड़िये की चालाकी

एक भेड़िया था। एक बार वह किसी उथले कुएँ में गिर पड़ा। निकलने की तरकीबें सोचने लगा पर कोई कारगर न हुई। उसने मुँडेर पर झाँकती हुई एक बकरी को देखा सो भीतर से बोला—"बहन जी! यहाँ बहुत चारा और पानी है। तुम भी आ जाओ। दोनों मिलकर चैन की जिंदगी जिएँगे।" भोली बकरी बातों में आ गई और गड्ढे में कूद गई। भेड़िये ने बकरी की पीठ पर चढ़कर छलांग लगाई और ऊपर आ गया। बकरी अकेले रह गई। बकरी की समझ में बात आई तो वह बोली—"भाई ! मैं तो दूध देने वाली जीव हूँ, मुझे तो कोई भी निकाल लेगा, पर भविष्य में तुम जैसों की सहायता करने कोई भी नहीं आएगा।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरों से छल करने पर एक बार तो सहायता मिल जाती है। पर सचाई पता लगने पर फिर कोई भी दुष्ट की सहायता करने आगे नहीं बढ़ता। दूसरों से छल-कपट करके हम अपना ही बुरा करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वसुधैव कुटुंबकम् का भाव

सरदी के दिनों में एक दिन इतनी बरफ पड़ी कि रास्तों में भी बहुत बरफ जम गई। सड़क बरफ के कारण फिसलनी हो गई थी। दीनबंधु और अलबर्ट श्वाइत्जर ऐसे मौसम में बाहर घूमने के लिए निकले। जमी हुई बरफ का दृश्य देखते हुए वे आँखें नीची रखे हुए चल रहे थे। ठंढ में सिकुड़ते एक कीड़े पर श्वाइत्जर की नजर पड़ी जो बेचारा अधमरा हो रहा था। वह रुक गए। उन्होंने उसे वहाँ से उठाकर एक झाड़ी के नीचे सूखी जमीन पर रख दिया और दीनबंधु से बोले—"एण्डूज! अब यह कीड़ा यहाँ सुरक्षित रह सकेगा। यदि सड़क पर ही पड़ा रहता तो अवश्य कुछ घंटों के बाद ईश्वर को प्यारा हो जाता।"

सभी जीवों पर दया करना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुत्ता और बिल्ली का बच्चा

एक बिल्ली का बच्चा अपनी माता से भटक गया। दो-तीन कुत्तों ने उसे घेर लिया। अभी वह इस बच्चे को दबोचना ही चाहते थे, कि गाँव के जमींदार रामसिंह का कुत्ता झपट पड़ा और उसने सभी कुत्तों को मार भगाया। बच्चा अपने संरक्षक के प्रति पूँछ उठाकर कृतज्ञता प्रकट करने लगा। कुत्ते को दया आ गई, वह इस असहाय बच्चे को उठाकर ले आया और मालिक की कोठी के पिछवाड़े उसे सुरक्षित रख दिया। जब तक बच्चा बड़ा नहीं हो गया, कुत्ता उसकी बराबर देख-रेख भी करता रहा और भोजन की व्यवस्था भी। बड़ा हो जाने पर भी दोनों साथ-साथ घूमते थे। शाम को तो दोनों इकट्ठे ही रहते थे। उनका स्नेह जीवन भर निभा।

प्रत्येक जीव पर दया तथा सहायता करना मनुष्य का भी कर्त्तव्य है।

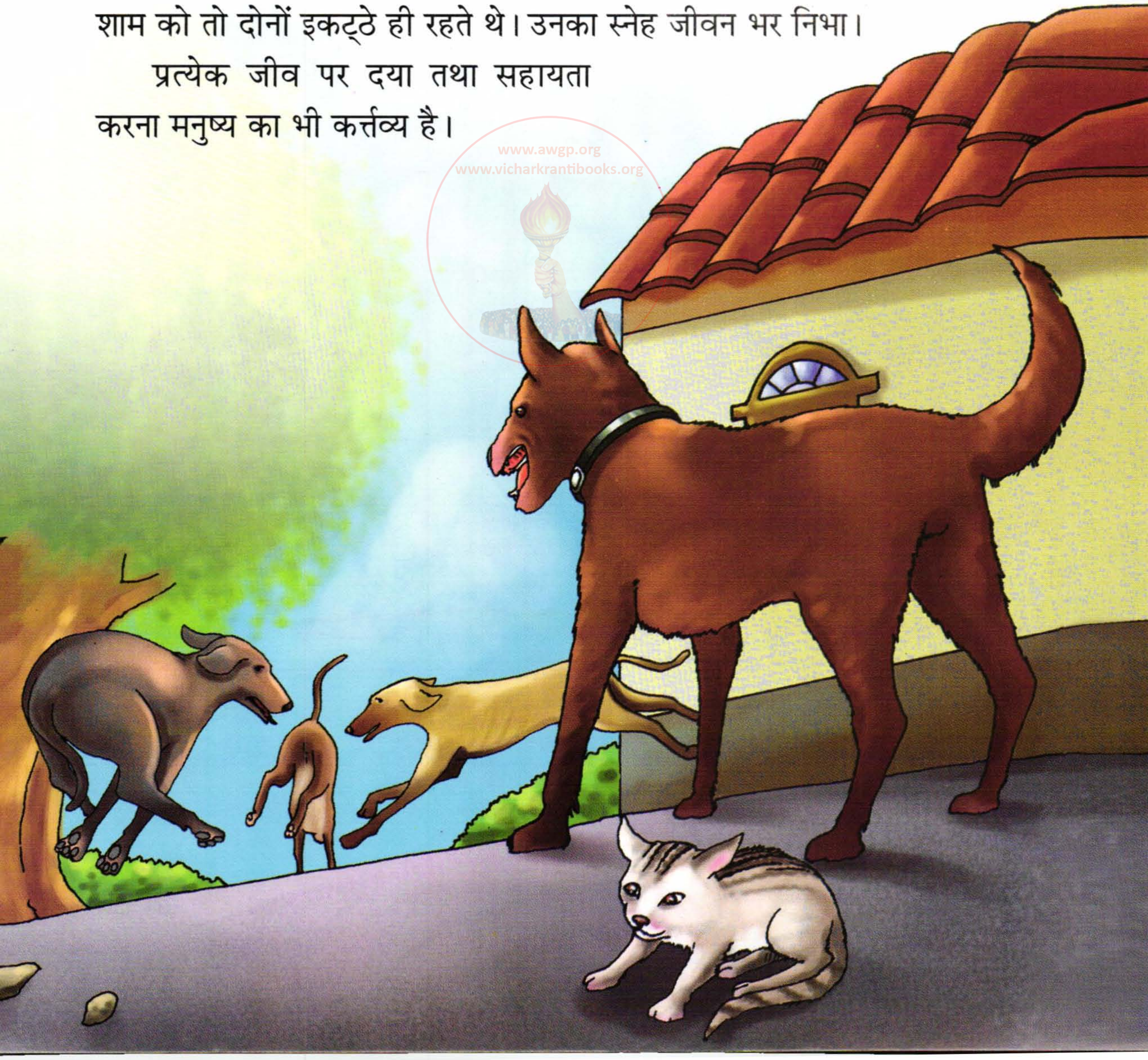

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाणी से आदमी की परख

वन-विहार के लिए आए हुए राजा का जहाँ पड़ाव था, उसी के पास एक कुएँ पर एक अंधा व्यक्ति यात्रियों को कुएँ से निकालकर जल पिलाया करता था। वन में राजा को प्यास लगी, उसने सिपाही को पानी लाने भेजा। सिपाही वहाँ जाकर बोला—"ओ रे अंधे एक लोटा जल इधर दे।" सूरदास ने कहा—"जा भाग, तुझ जैसे मूर्ख नौकर को पानी नहीं देता।" सिपाही खीझकर वापस लौट गया। अब प्रधान सेनापति स्वयं वहाँ पहुँचे और कहा—"अंधे भाई, एक लोटा जल शीघ्रता से दे दो।" अंधे ने उत्तर दिया—"कपटी मीठा बोलता है। लगता है पहले वाले का सरदार है। मेरे पास तेरे लिए पानी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं।'' दोनों ने राजा से शिकायत की—''महाराज! बुड्ढा पानी नहीं देता।'' राजा उन दोनों को लेकर स्वयं वहाँ पहुँचा और नमस्कार कर कहा—''बाबाजी! प्यास से गला सूख रहा है, थोड़ा जल दें तो प्यास बुझाएँ।'' अंधे ने कहा—''महाराज! बैठिए, अभी जल पिलाता हूँ।'' आपसे पहले आपका नौकर फिर सरदार पानी लेने आए थे। राजा ने पूछा—''महात्मन्! आपने आँखों में ज्योति न होकर भी यह कैसे जाना कि एक नौकर है और दूसरा सरदार और मैं राजा हूँ।'' बुड्ढे ने हँसकर कहा—''व्यक्ति की वाणी से उसके व्यक्तित्व का पता लग जाता है।'' अतः अपनी वाणी को सुधारकर बोलना चाहिए।

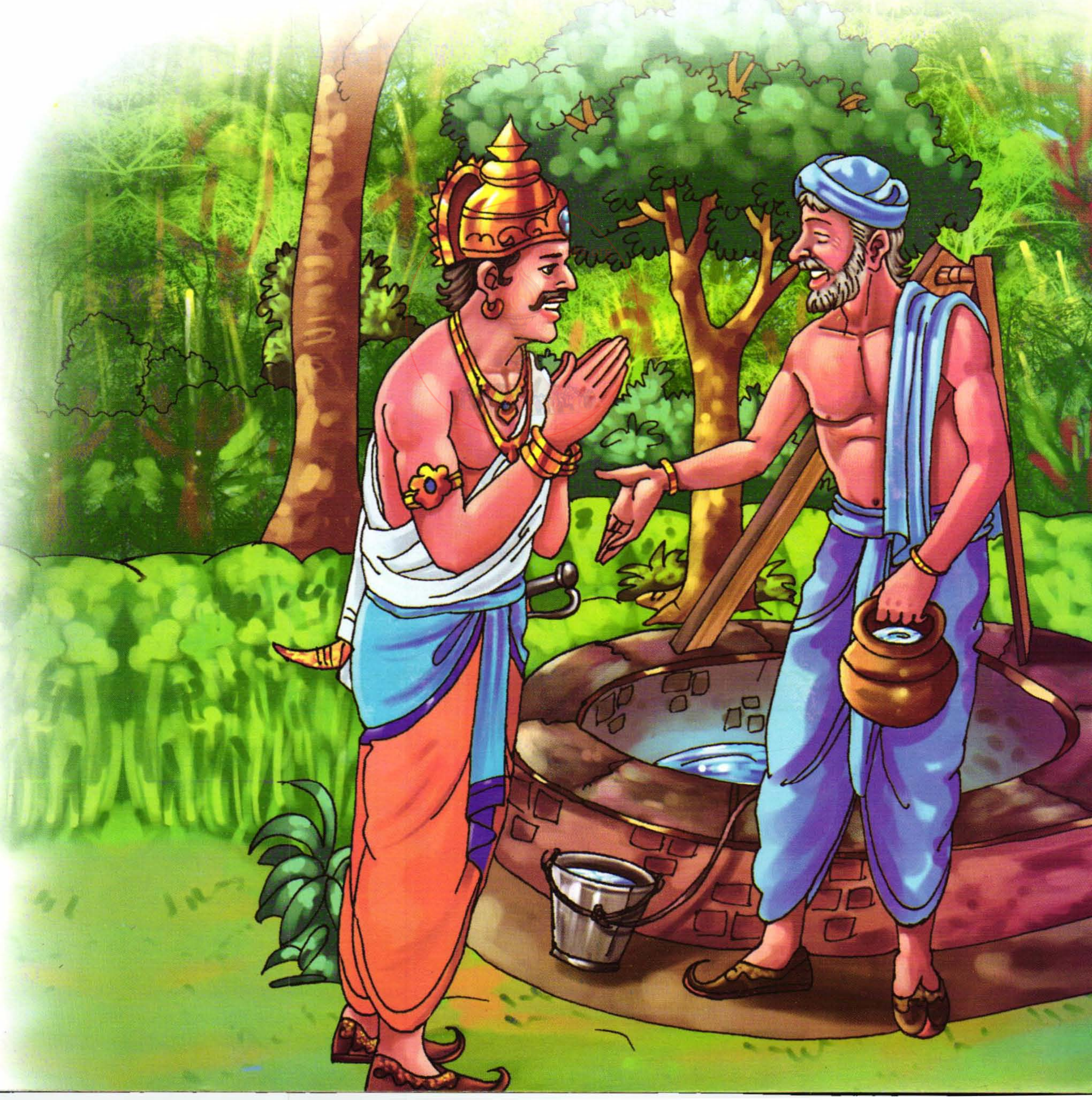

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईमानदारी और संवेदना

अल्जीरिया की मदाम नेपियर के पास एक कुत्ता था। वह नित्य ही एक झोला मुँह में लटकाकर जाता। डबलरोटी वाला गिनकर बारह डबलरोटी उसमें रख देता और वह ले आता।

कुछ दिन से ग्यारह ही रोटियाँ आने लगीं। मालिक ने दुकानदार से पूछा। मालूम पड़ा कि वह तो बारह ही रखता है। तब कुत्ते की छिपकर जाँच की गई। पाया गया कि बाहर एक बीमार कुतिया है। एक रोटी नित्य वह झोले में से उसे ही दे आता है। तब तेरह रोटियाँ भेजने को कहा गया। घर पर बारह रोटियाँ पहुँचने लगीं। कुछ दिन बाद घर पर तेरह रोटियाँ पहुँची। तब फिर पता लगाया और पाया गया कि कुतिया अब चलने-फिरने योग्य हो गई है और अपना भोजन स्वयं जुटा लेती है।

काश! छल, बेईमानी, स्वार्थपरता तथा अविश्वास की ओर दौड़ता हुआ मानव इन बेजुबान प्राणियों से ही कुछ सीख सकता।

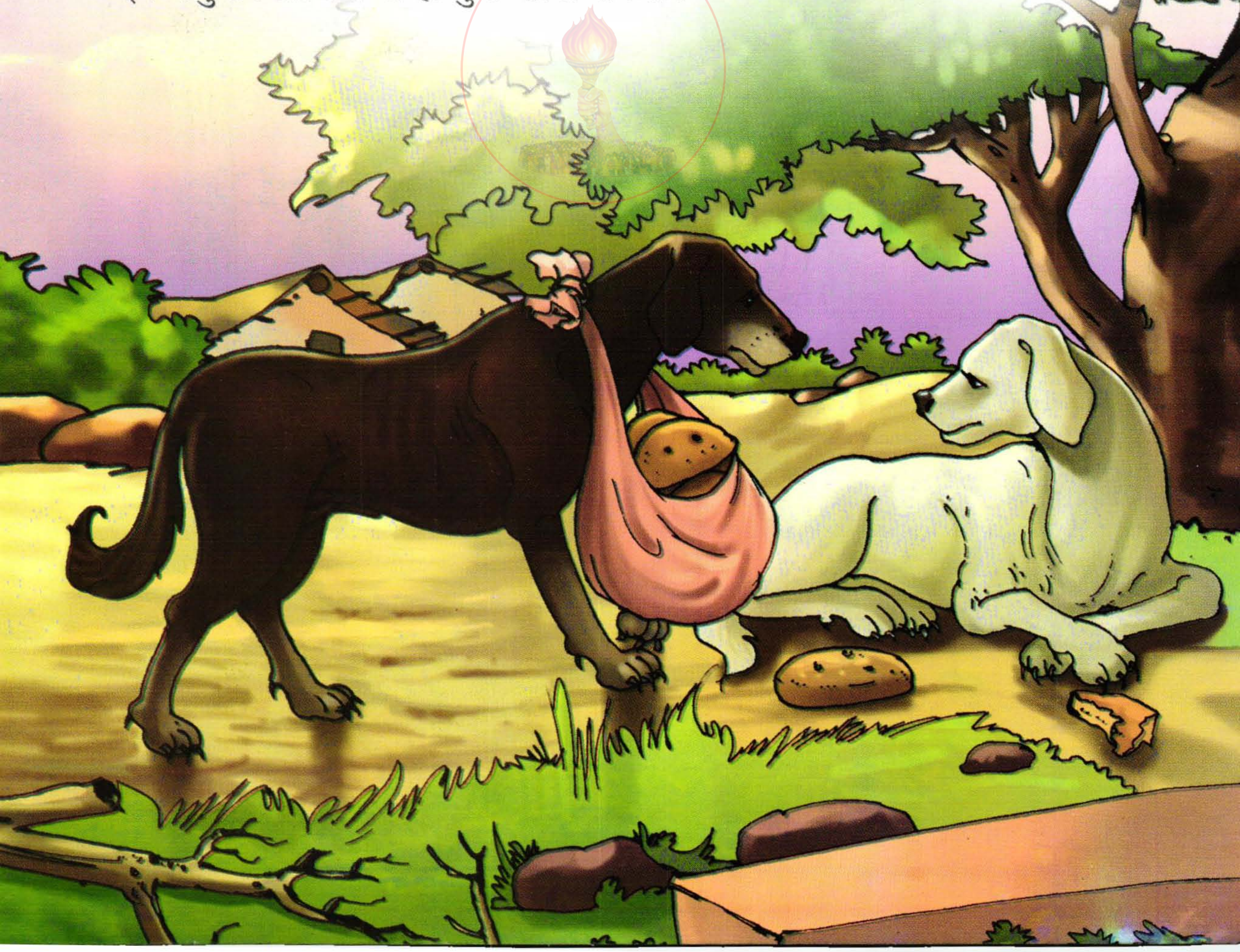

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

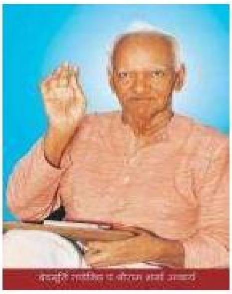

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऎसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org